antim yatra:arunjaity.qxd 9/26/2010 7:39 PM Page 50

स्कंध पुराण और गरुण पुराण में मिलता है।

कहते हैं कि संतों का सीकरी से कोई सरोकार नहीं होता। शायद इसलिए नानाजी के आखिरी विश्राम के अगले दिन रविवार था। उन्होंने ऐसा समय चुना कि शोक-कर्म किसी अन्य कर्म को प्रभावित न कर सके। लेकिन यह दिन प्रत्यक्ष भगवान सूर्य के नाम से जाना जाता है जो प्राण व ऊर्जा का संचारक होता है। नानाजी ने कितने ही लोगों में उस ऊर्जा का संचार किया था, जो उनके करीब थे और जो उनके करीब नहीं थे पर दूर से ही नानाजी और उनके अप्रतिम कार्यों से प्रभावित होकर दोनों को नमन करते थे। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उनको कल्पना लोक का धनी बताया जो सबसे पहले सोच स्थापित करते थे और फिर उसे अंजाम तक

डीआरआई, दिल्ली पहुंचा नानाजी का पार्थिव शरीर

दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली में शोक पुस्तिका में संदेश लिखते हुए पूर्व राष्ट्रपति डा. कलाम

पहुंचाते थे। उनके अनवरत परिश्रम ने गांवों को उत्थान में जबर्दस्त योगदान दिया कि लोकसभा की अध्यक्ष मीरा कुमार भी उनके निधन से भाव-विव्हल हो गईं। लोकसभा ने नानाजी के निधन पर शोक जताया।

लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार ने नानाजी को जाना माना किसान व सामाजिक कार्यकर्ता बताते हुए कहा कि वह गांवों के संपूर्ण कायाकल्प के वाहक थे। नानाजी की प्राथमिक शिक्षा से लेकर ग्रामोदय विश्वविद्यालय व ग्रामीण उत्थान के कार्यों की मर्मस्पर्शी पहल को उन्होंने याद कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। राज्यसभा ने भी अपने सदस्य नानाजी को श्रद्धांजलि दी। ऐसा होता भी क्यों न, आखिर अपनी सकारात्मक चर्चाओं में नानाजी ने इस सदन को याद दिलाया था कि सामाजिक व्यक्ति का ध्येय यह होना चाहिए कि गांवों के समग्र उत्थान से ही देश का समन्वित विकास संभव है। नानाजी ने स्वयं यह गढ़कर सबको रास्ता दिखाया था।

नानाजी की देह को मुख्यमंत्री के विमान से सतना से दिल्ली लाया गया। सतना के हैलीपैड पर उनके अंतिम दर्शनों

रा. स्व. संघ कार्यालय, झंडेवाला में अंतिम दर्शनों हेतु रखी गई नानाजी की पार्थिव देह